बुधान की शादी
और अन्य नाटक

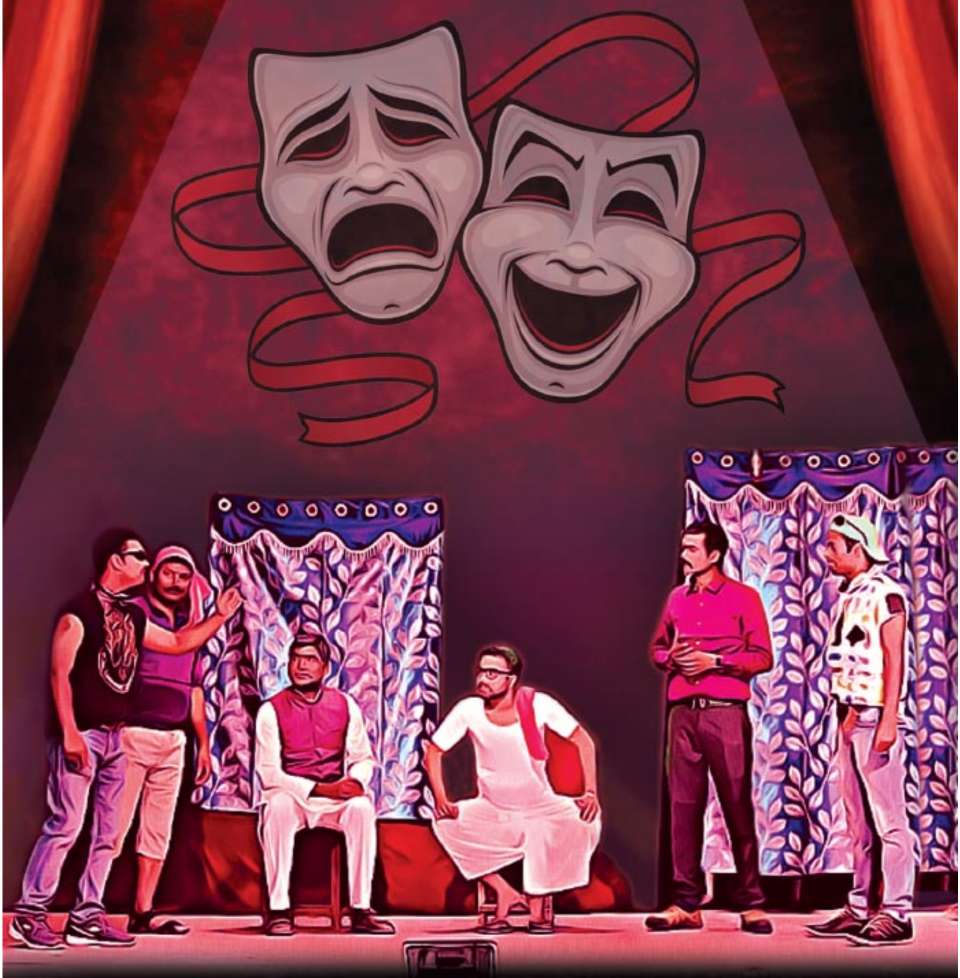

पीयूष कुमार

Copyright © 2020, Peeyoosh Kumar
All rights reserved.

No part of this publication may be reproduced or transmitted in any form or by any means, electronic or mechanical, including photocopy, recording or any information storage and retrieval system now known or to be invented, without permission in writing from the publisher, except by a reviewer who wishes to quote brief passages in connection with a review written for inclusion in a magazine, newspaper or broadcast.

Published in India by Prowess Publishing,
YRK Towers, Thadikara Swamy Koil St, Alandur,
Chennai, Tamil Nadu 600016

ISBN: XXX-XX-XXXXXX-X-X

Library of Congress Cataloging in Publication

तालिका

लेखक की कलम से. xiii

विशेष टिप्पणी xvii

बुधन की शादी

दृश्य 1 7

दृश्य 2 15

दृश्य 3 23

दृश्य 4 37

दृश्य 5 51

बुधन की शादी - दोबारा।

दृश्य 1 75

दृश्य 2 83

दृश्य 3 96

दृश्य 4 101

शादी या बर्बादी।

दृश्य 1 122

दृश्य 2 127

दृश्य 3 142

दृश्य 4 153

लेखक की कलम से

दिसंबर 2016, में पहली बार मेरी कंपनी में “हिंदी नाट्योत्सव” का आयोजन होना था। वैसे तो पिछले कई दशकों से यहां प्रतिवर्ष तेलुगू नाट्य उत्सवों का आयोजन होता आ रहा था, परंतु हिंदी नाट्य उत्सव पहली बार 2016 में अंतर्विभागीय नाटक प्रतियोगिता के रूप मे मनाया गया। चूंकि लेखन और कला क्षेत्र की ओर मेरा झुकाव शुरू से ही था, तो मैंने भी अपनी प्रविष्टि डालने का निश्चय किया। अब विषय का चुनाव एवं विस्तार अगला कार्य था। उसी समय मेरे एक करीबी मित्र के विवाह की चर्चाएं चल रही थी। उसके लिए बहुत से रिश्ते आ रहे थे लेकिन कभी बात नौकरी पर आकर अटक जाती तो कभी लड़की के साथ कम्पेटिबिलिटी आड़े आ जाती थी। कारण कोई भी हो, इसी क्रम मे कुछ हास्य से ओत-प्रोत प्रसंग सामने आ रहे थे। उस घटना से प्रेरित होकर तथा कुछ अन्य ज्वलंत सामाजिक विषयों को लेकर लिखा गया है यह नाटक।

लेखन के बाद अब अगला कार्य था मंचन। चूंकि अपनी सृजनात्मक प्रतिभाओं को निखारने का यह अवसर हमें अपने नियोक्ता ने प्रदान किया तो अभिनय मे रुचि रखने वाले मेरे सहकर्मी आगे आए। हम सभी ने मिलकर हिंदी नाटक मंडली का निर्माण किया। तीन अलग-अलग हिंदी नाटकों की प्रविष्टियां आईं, जिनमे से एक है “बुधन की शादी”। जमकर तैयारी हुई और दिनांक 27.12.2016 को बीएचईएल, हैदराबाद के कम्युनिटी सेंटर में इसका प्रथम बार मंचन किया गया। दर्शकों से मिली प्रतिक्रियाओं से यह विश्वास हो गया कि यह नाटक दर्शकों को हंसाने मे कामयाब हुआ।

2016 से लेकर अब तक तीन वार्षिक नाट्य उत्सवों का आयोजन हो चुका है। हमारी नाटक मंडली हर वर्ष इसमें भाग लेती है। 2018 मे जब दूसरे नाट्य उत्सव की उद्घोषणा हुई तो “बुधन की शादी” के दूसरे भाग की मांग दर्शकों की तरफ से आने लगी। इसी क्रम में मैंने इस कहानी को आगे बढ़ाते हुए “बुधन की शादी-दोबारा” लिखा। इस नाटक को भी दर्शकों ने काफी सराहा।

2019 के नाट्य उत्सव मे भी दर्शकों को बुधन की शादी के अगले अंक की आकांक्षा थी और लोगो ने मुझे ई-मेल व फोन करके कुछ वैसा बनाने के इच्छा व्यक्त की। पर मेरा मानना है कि किसी चीज को उतना ही खींचना चाहिए कि वो फट ना जाए। इसलिए बुधन की शादी पर पूर्ण विराम लगा दिया। और इसीसे मिलता-जुलता एक और नाटक लिखा “शादी या बर्बादी”। यह नाटक कहानी है विवाहित जोड़े की। प्रेम विवाह के बाद एक कामकाजी लड़की, जिसे ससुराल पक्ष द्वारा नौकरी नहीं करने के लिए मजबूर किया जाता है। नाटकीय अंदाज में लड़की द्वारा अपने ससुराल में अपना पक्ष एवं अपनी भावनाओं को अभिव्यक्त करने की कहानी है। पिछले दो नाटकों की भांति, यह भी एक हास्य नाटक है। दर्शकों ने इसे भी काफी सराहा है।

इस पुस्तक को बनाने तैयार करने में मेरे बहुत सारे मित्रों और मंडली के सदस्यों का प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष रूप से योगदान दिया है। सबसे पहले तो मैं अपने सबसे पहली नाटक मंडली जिसका नाम हमने “सर्वोपरि” रखा था, जिसे हम सात मित्रों ने मिलकर बनाई थी, उनका हृदय से धन्यवाद देना चाहूंगा। बाद में यही नाटक मंडली विस्तृत हो कर भेल हिंदी नाटक मंडली बन गई, उनका भी बहुत बहुत धन्यवाद। धन्यवाद श्री आलोक कुमार जी का, जिन्होंने कुछ संवाद लिखने में हमारी बहुत मदद की। धन्यवाद श्री अमृत सिंह जी का जिन्होंने इस पुस्तक के संपादन में सहयोग दिया। धन्यवाद उन सभी कलाकारो और नियोजनकर्ताओं का जिनके बिना इन नाटकों का मंचन और यह पुस्तक संभव हो पाई।

ये तीनों ही नाटक एक जैसे विषय पर हैं इसलिए इन तीनों का संग्रह प्रकाशित करवाने का सोचा। इस किताब से, जो भी इस नाटक का मंचन करना चाहें, जैसे स्कूल या कॉलेज के बच्चे या फिर कोई थिएटर ग्रुप या नाटक मण्डली, को इसके मंचन में काफी मदद मिल सकेगी। उम्मीद है कि पाठकों को ये नाटक पढ़ने में भी उतना ही आनंद आएंगा, जितना कि मंचन देखने में।

पीयूष कुमार

विशेष टिप्पणी

आज भी भारत में अधिकांश शादियां, एक ही जाति या समुदाय के अंदर ही की जाती हैं। अधिकतर शादियों में जात बिरादरी का मिलान किया जाता है। कुंडलियां मिलाई जाती हैं। दहेज प्रथा जो की एक गैर कानूनी सामाजिक कुरीति है उसका चलन भी अभी तक पूरी तरह से रूक नहीं पाया है। इस कुरीति के कारण आज भी कितने रिश्ते टूट जाते हैं। कई बार लड़कों के घर वाले अपने बेटे को अपनी प्रापर्टी समझते हैं और उचित दाम (दहेज) मिलने पर ही शादी तय करते हैं। प्रायः लड़की वाले भी दहेज देना अपनी शान और ज़िम्मेदारी समझते हैं और कर्ज में डूबकर लड़की की शादी करते हैं।

प्रथम नाटक "बुधन की शादी" में बुधन के पिता चरण महतो एक ऐसे ही चरित्र को दर्शाता है जोकि सही दहेज न मिलने के कारण अपने बेटे कि शादी नहीं तय कर पा रहा। बुधन महारत्न कंपनी भारत हेवी इलेक्ट्रिकल्स लिमिटेड (भेल), हैदराबाद में कार्यरत है, जो कि भारत सरकार का एक लोक उपक्रम है। यह नाटक बुधन के गांव के घर, जोकि बिहार राज्य के भागलपुर जिले में है और उसके बाबूजी जो उस गांव में रहते हैं, पर आधारित है। बुधन के पिताजी अपने लड़के कि शादी अपने गांव में ही कराना चाहते हैं। यही उनकी सबसे बड़ी समस्या है। गांव के पंडित से लेकर टेन्ट हाउस वाले तक, अपना बिजनेस चलाने के लिए, उनकी इस समस्या का तरह तरह से समाधान निकालने कि कोशिश करते रहते हैं। इसी ताने-बाने में बुनी यह हास्य नाटिका कुछ सामाजिक बुराइयों के प्रति जागरूकता फैलाने का भी काम करती है।

दूसरा नाटक “बुधन की शादी-दोबारा” भी उसी पृष्ठभूमि पर आधारित है। सभी पात्र वही हैं और कुछ नए पात्रों को भी जोड़ा गया है। एक तरह से तो यह उसी नाटक का अगला पड़ाव है पर दूसरी तरह से इसकी कहानी अपने पहले भाग से बिलकुल अलग है। दोनों नाटक एक साथ भी किए जा सकते हैं एवं दोनों नाटकों को अलग-अलग भी किया जा सकता है।

दोनों नाटकों में पहनावे की बात करें तो, चरण महतो धोती और बानियान के साथ एक गमछा अपने साथ जरूर रखता है, चश्मा भी लगाता है। पंडितजी भी धोती और बानियान पहनते हैं। गले में रुद्राक्ष माला और माथे पर तिलक के साथ हमेशा अपने बगल में एक झोला लटकाए रहते हैं। सरला साड़ी पहनती है और कभी-कभी चश्मा भी लगाती है। लड़की के पिता को भी धोती कुर्ता और गमछा जैसे परिधान पहनाए जा सकते हैं। विमल, चमन, अवधेश और अन्य पात्र के लिए कोई विशेष परिधान की आवश्यकता नहीं है, वे कुछ भी ऐसा पहन सकते हैं जोकि उनके चरित्र को प्रभावशाली बनाए।

तीसरा व अंतिम नाटक “शादी या बर्बादी” की भी पृष्ठभूमि शादी ही है परंतु यह बिलकुल अलग नई, आज कल के जमाने की कहानी है। हालांकि इस नाटक के पात्र और पटकथा पिछले दो नाटकों से मिलते-जुलते हैं, परंतु इसका सार अलग है। प्रेम विवाह के बाद सास ससुर की ज़िद के कारण एक कामकाजी लड़की को शादी के बाद घर में बैठा दिया जाता है। इसका परिणाम क्या निकलता है उसी को दिखाने की कोशिश इस नाटक में की गई है। साथ ही साथ इस हास्य नाटक में कुछ सामाजिक कुरीतियों के प्रति जागरूकता फैलाने का प्रयास भी किया गया है। इस नाटक के पात्रों के लिए कोई विशेष परिधान कि आवश्यकता नहीं है, वे कुछ भी ऐसा पहन सकते हैं जोकि उनके चरित्र को प्रभावशाली बनाए।

बुधन की शादी
(हिंदी नाटक)

अभिनय अवधि: 55 मिनिट

पात्र परिचय

पब्लिक सेक्टर में कार्यरत एक लड़का	:	बुधन
लड़के का पिता	:	चरण महतो
लड़के की माता	:	सरला
टेन्ट हाउस का मालिक	:	विमल
टेन्ट हाउस/डीजे वाले (विमल) का भाई	:	चमन
लड़की का पिता	:	भुलन महतो
मध्यस्थता करने वाला गांव का लड़का जो कि दोनों पक्षों के बीच का जानने वाला होता है	:	अवधेश
गांव के पंडितजी	:	मोहन तिवारी
ढ़ोल-तासे वाले	:	तीन लोग
समय/काल	:	वर्तमान
स्थान	:	भागलपुर के एक गांव में स्थित एक घर महतो निवास

पहला दृश्य	:	महतो निवास का बाहरी हिस्सा (बरामदा)
दूसरा दृश्य	:	बगीचा
तीसरा, चौथा एवं पांचवा दृश्य	:	महतो निवास का बाहरी हिस्सा (बरामदा)

कम्युनिटी सेंटर, बीएचईएल हैदराबाद में

27 दिसंबर, 2016 को प्रथम मंचन

मंच पर

बुधन	:	पीयूष कुमार
चरण महतो	:	मो॰ ओवैस अनवर
सरला	:	प्रियंका घोष
मोहन तिवारी	:	अशोक कुमार
विमल	:	शशि कुमार
चमन	:	प्रदीप कुमार
सगुन महतो	:	आफताब आलम
अवधेश	:	विकास सिंह

नेपथ्य में

प्रकाश	:	वारुणी मालवी
संगीत	:	मो॰ इरफान
वेशभूषा	:	ललिता
सेट्स	:	अमृत सिंह
प्रस्तुति प्रबंधक	:	सी एच सुनील
रूप सज्जा	:	कुमार के
निर्देशक	:	पीयूष कुमार

दृश्य 1

घर के बाहरी हिस्से (बरामदे) का दृश्य है। मंच के पिछले हिस्से में, लटकते पर्दे पर या फ्रेम लगाकर, बाईं ओर, घर का दरवाजा बना हुआ है, जिसमें से पात्र घर के अंदर-बाहर आ-जा सकते हैं। दरवाजे पर लटकता हुआ एक पर्दा है। दरवाजे के बगल में, घर की बाहरी दीवार प्रतीत हो रही है, जिस पर महतो निवास, भागलपुर नेम प्लेट लगी है। उसके बगल में ही, थोड़ी दूरी पर, कपड़े से बनीं दो खिड़कियां हैं जोकि पर्दे से ढंकी हुई हैं। घर के बाहर, दरवाजे के सामने एक खाट बिछी हुई है। खाट के बगल में एक स्टूल है। स्टूल के ऊपर एक लोटा, एक हाथ से झलने वाला पंखा और एक छोटा सा बेसिक फीचर मोबाइल फोन रखा है। एक दूसरा स्टूल मंच के बीच में रखा हुआ है। प्रकाश वृत खाट पे बैठे चरण महतो पर पड़ता है। चरण महतो बैठा अखबार पढ़ रहा है। मुर्गा बांग दे रहा है गाय और बकरी की आवाज़ के साथ चिड़ियों की चहचहाहट भी सुनाई पड़ रही है। मंच के अगले हिस्से में, घर के सामने एक रास्ता है। मद्धिम प्रकाश के साथ पूरा मंच प्रकाशमान होता है। गांव का पंडित मोहन तिवारी अपने पारंपरिक पहनावे में एक झोला बगल में लटकाए वहां से गुजरता है। उसको वहां से जाता हुआ देख चरण महतो, मोहन तिवारी को आवाज लगाता है।

चरण महतो : *(बैठे-बैठे, अखबार के ऊपर से झांकते हुए)* ओ पंडितजी, अरे ओ मोहन तिवारी जी कहां जा रहे हैं, इधर आइए।

अखबार वहीं खाट पर रख खड़ा होकर उनकी तरफ बढ़ता है।

मोहन तिवारी : *(पीछे मुड़ते हुए)* अरे नहीं... महतो जी थोड़ी जल्दी में हूं। *(आगे बढ़ने लगता है।)*

चरण महतो : *(पंडितजी के पास जाते हुए)* काहे की जल्दी पंडितजी, आइए, आइए बैठिए इधर, दो चार बातें हो जाए।

मोहन तिवारी : *(चरण महतो की तरफ घूम कर)* जी चरण महतो जी क्षमा करें, अभी मैं थोड़ी जल्दी में हूं, बगल गांव के सरपंच के लड़के की शादी करवाने जा रहा हूं।

चरण महतो : *(स्टूल सरकाकर मोहन तिवारी की तरफ बढ़ाते हुए)* अरे पंडित जी करवा लीजिएगा शादी.... पांच मिनिट तो बैठ लीजिए महाराज, चाय पी कर जाइएगा। इतनी भी क्या जल्दी है।

मोहन तिवारी : चाय..... *(थोड़ा सोचते हुए फिर घड़ी देखते हुए)* ठीक है जजमान, आप इतना बोल रहे हैं, तो बैठ जाता हूं लेकिन पांच मिनिट बस और हां *(हंसते हुए)* भाभीजी को बोलिए की चाय में शक्कर थोड़ी ज्यादा डालें।

चरण महतो : हां पंडितजी ... बोलता हूं।

चरण स्टूल को अपने गमछे से साफ करता है, पंडित उसपर बैठ जाता है। फिर अपनी पत्नी सरला को आवाज लगाता है।

सरला... ओ सरला सुनती हो, मोहन तिवारी जी आए है, दो कप चाय बना दो, शक्कर थोड़ी ज्यादा डालना।

सरला : *(दरवाजे के पर्दे से झांकते हुए)* जी ठीक है।

चरण महतो वहीं पंडित के बगल मे नीचे ही बैठ जाता है।

मोहन तिवारी : और बताइए जजमान, बेटे के विवाह का क्या हुआ, कब कर रहे, कुछ बात बनी?

चरण महतो : *(बैठे-बैठे अपना माथा पकड़ते हुए)* आपने तो मेरी दुखती रग पर हाथ रख दिया पंडितजी, क्या बताऊं, आपको तो पता ही है, पिछले तीन साल से लड़की ढूंढ रहा हूं, कई जगह रिश्ता होते होते रह गया। कुछ न कुछ वजह से रिश्ता टूट जा रहा है। कभी लड़की वालों को लड़का पसंद नहीं तो कभी उसकी नौकरी। सभी लोग तो मेरे बुधन में ही कमी निकालते हैं। बहुत परेशान हूं।

मोहन तिवारी : ये कहानी तो आप कितनी बार सुना चुके हैं जजमान। आज रहने दीजिये अपनी कहानी बाद में सुनाइएगा। कभी बाद में आकर आराम से बैठूंगा आपके घर। कितनी बार तो कहा है की बुधन की कुंडली बनवा लो, कुछ दोष-वोष होगा उसका निवारण कर देंगे पूजा-पाठ, हवन कराके। फिर देख लेना कैसे हो जाती है आपके बुधन की शादी फटाफट।

चरण महतो : *(धीरे से खड़ा होते हुए, हाथ जोड़ कर)* पंडितजी फिर आप ही बताइए कि मुझे क्या करना होगा? बता देते तो अच्छा होता?

मोहन तिवारी : *(अत्यंत खुशी से खड़ा होते हुए, बोलते-बोलते आगे बढ़ता है। चरण महतो भी उसके पीछे-पीछे जाता है।)* कुछ नहीं जजमान, हजार दो हजार का खर्चा है। बच्चे की जन्मतिथि, जन्म समय और जन्म स्थान बताइए। फिर दो दिन के बाद पूरा लिखित ब्योरा आपको सौप दूंगा। कौन से ग्रह की दशा कब तक रहेगी, विवाह में विघ्न-बाधा का कारण क्या है, सब पता चल जाएगा। और हां, फिर निवारण हेतु कुछ पूजा पाठ हवन करना होगा जजमान।

चरण महतो : *(सोचते हुए)* लेकिन ये हजार, दो हजार कुछ ज्यादा ही हैं।

मोहन तिवारी : *(गुस्से से)* देखिये जजमान विलंब न करें, मुझे और कही भी जाना है। आपको अपने बच्चे की कुंडली बनवानी है या नहीं, जल्दी बता दें, वरना मैं चलता हूं।

चरण महतो : *(पंडित को रोकते हुए)* बनवानी है पंडितजी, रुकिए पंडितजी, रुकिए। अभी बस 1 मिनिट में सब लाता हूं पंडितजी। आप यहां बैठिए।

स्टूल आगे करके, पंडित को बैठने का संकेत देता है। पंडित बैठ जाता है। चरण तेजी से दौड़ कर घर के अंदर जाता है। पंडित वहीं मुस्कुराते हुए स्टूल पर बैठा है। कुछ क्षणों बाद चरण महतो अंदर से एक कागज लेकर

You've Just Finished your Free Sample

Enjoyed the preview?

Buy: https://store.prowesspub.com